DR. SUMAN LAL RAY
Guest Assistant professor
Dept. of Sanskrit
S.R.A.P. college, Bara chakia
BRABU–Muzaffarpur

B.A. (Hons.) part – II
Sub. — Sanskrit
Paper — IV
आलोचनात्मक प्रश्न

15 × 2 = 30 Marks
[redacted]

2. 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' की भाषाशैली पर प्रकाश डालें।

उत्तर → महाकवि कालिदास का भाषा पर पूर्ण अधिकार है, यही कारण है कि उनकी पदयोजना बड़ी स्वाभाविक हुई है। उनकी भाषा परिष्कृत, सुसंस्कृत, सरल, सरस और मनोरम है। संवादों की भाषा तो इतनी चुस्त दुरुस्त और मुहावरेदार है कि वह विषय को अत्यन्त आकर्षक बना देती है। कालिदास की भाषा सर्वत्र प्रसाद और माधुर्य गुणों पर आधारित है। विद्वद्वर मिराशी महोदय ने अपने ग्रन्थ 'कालिदास' में लिखा है कि — 'अभिज्ञानशाकुन्तलम्' की भाषा अत्यन्त प्रसादयुक्त और रमणीय है; इसमें उपमा, उत्प्रेक्षा, स्वभावोक्ति, अर्थान्तरन्यास आदि अनेक अलंकार आये हैं। इनमें कहीं भी क्लिष्टता, कल्पना की खींचातानी, दुरान्वय इत्यादि दोष नहीं दिखायी देते।

ध्यातव्य है कि महाकवि कालिदास की लोकप्रियता का सर्वप्रमुख कारण उनकी प्रसादपूर्ण तथा सरस शैली है। उनके सभी ग्रन्थ वैदर्भी-रीति में लिखे गये हैं —

"वैदर्भीरीतिसन्दर्भे कालिदासो विशिष्यते।
माधुर्यव्यञ्जकैर्वर्णै रचना ललितात्मिका।
अल्पवृत्तिरवृत्तिर्वा वैदर्भी-रीतिरिष्यते॥"

अर्थात् 'ललित पदविन्यास के माधुर्य से युक्त और समासरहित तथा कम समासोंवाली रचना वैदर्भी रीति कहलाती है। कालिदास की रचना में बड़े-बड़े समासान्त पदों का सर्वथा अभाव है।' इसके अतिरिक्त किसी भाव के चित्रण के लिए कालिदास एक अनूठी (अनिर्वचनीय) शैली का आश्रय लेते हैं। वे उसे शब्दों में कहने की अपेक्षा व्यञ्जना-वृत्ति से उसकी ओर संकेतमात्र कर देना पर्याप्त समझते हैं।

प्रस्तुत शाकुन्तलम् नाटक में संक्षिप्त एवं व्यञ्जनात्मक शैली में विषय का मार्मिक वर्णन करते हुए महाकवि लिखते हैं —

"भव हृदय साभिलाषं संप्रति सन्देहनिर्णयो जातः।
आशङ्कसे यदग्निं तदिदं स्पर्शक्षमं रत्नम्॥" (अभि० 1/27)

P.T.O.

यहाँ पर औत्सुक्य भावध्वनि का चमत्कार है। इसी प्रकार—

"अनाघ्रातं पुष्पं किसलयमलूनं कररुहै—
रनाविद्धं रत्नं मधु नवमनास्वादितरसम्।
अखण्डं पुण्यानां फलमिव च तद्रूपमनघं
न जाने भोक्तारं कमिह समुपस्थास्यति विधिः॥" (शा० 2/10)

इस श्लोक के द्वारा शकुन्तला के कौमार्य तथा दुष्यन्त के द्वारा ग्रहणीय होने की ध्वनिपूर्ण व्यञ्जना है। इसी क्रम में—

"दर्भाङ्कुरेण चरणः क्षत इत्यकाण्डे
तन्वी स्थिता कतिचिदेव पदानि गत्वा।
आसीद् विवृतवदना च विमोचयन्ती
शाखासु वल्कलमसक्तमपि द्रुमाणाम्॥" (शा० 2/12)

इस पद्य के माध्यम से नायिका के उत्कण्ठातिशय, लज्जा तथा दुष्यन्त के आश्चर्य एवं आनन्दमयता को ध्वनित किया गया है।

इस प्रकार किसी विषय का यथार्थ तथा सजीव वर्णन करने की दिशा में कविवर कालिदास असाधारण-पटुता रखने के साथ-साथ कोमल रसों के सरस चितेरा हैं। गम्भीर रसों के प्रति उनकी उतनी अभिरुचि नहीं दिखायी देती; जितनी श्रृंगार की। यही कारण है कि लोग, उन्हें मुख्यतः श्रृंगारिक कवि मानते हैं। जहाँ तक छन्द-रचना का प्रश्न है— कवि ने प्रस्तुत नाटक में लगभग 24 प्रकार के छन्दों का प्रयोग किया है, जो सर्वथा भावों के अनुकूल हैं। इनमें मन्दाक्रान्ता तथा वसन्ततिलका के द्वारा करुणभावों के तथा शार्दूलविक्रीडित के द्वारा गम्भीरभावों को व्यक्त करने का प्रयास किया है। धार्मिकभाव-प्रदर्शन हेतु एक वैदिक त्रिष्टुप् छन्द— का भी प्रयोग किया है। जब शकुन्तला अपने पतिगृह प्रस्थान करने से पहले तीनों अग्नियों की प्रदक्षिणा करती है तब महर्षि कण्व आशीर्वाद स्वरूप कहते हैं:—

"अमी वेदिं परितः क्लृप्तधिष्ण्याः समिद्वन्तः प्रान्तसंस्तीर्णदर्भाः।
अपघ्नन्तो दुरितं हव्यगन्धैर्वैतानास्त्वां वह्नयः पावयन्तु॥" (शा० 4/8)

— o —